एक देवलोक सत्यापन-टिप्पणी

मुहूर्त इंजन कैसे काम करता है

एक सत्यापन-टिप्पणी — पहले गणित, फिर फलित

01

पद्धति: पहले गणित, फिर फलित

यह उपकरण एक ही प्रश्न का उत्तर देता है — कोई क्षण किसी कार्य के आरंभ के लिए शुभ है या नहीं — और वह उत्तर **आकाश की गणना से** देता है, किसी पंचांग की नकल से नहीं। क्रम सोच-समझकर है: पहले खगोल-गणित और नियमों का यथावत् प्रयोग (गणित) सही हो; फलित उसी पर खड़ा होता है। गणित की एक दरार हर निर्णय में फैल जाएगी, इसलिए कठोरता गणित में ही रहती है।

तीन गुण इसे जाँचने-योग्य बनाते हैं। यह **स्थितिहीन (stateless)** है — आपके बारे में कुछ भी संग्रहीत नहीं होता; आपकी जन्म-तिथि, समय और स्थान हर अनुरोध के साथ आते हैं, उसी क्षण गणना होती है, फिर छूट जाते हैं। समय व अर्थ का हर निर्णय **किसी मूल ग्रंथ से जुड़ा** है (अंत में सूचीबद्ध)। और संख्याएँ स्वतंत्र स्रोतों से **प्रति-सत्यापित** हैं, केवल दावा नहीं।

02

आकाश, दो विधियों से गणित

इंजन दो स्वतंत्र स्तरों पर चलता है। **स्तर A** को केवल सूर्य की ज्यामिति चाहिए: मानक NOAA विधि से सूर्योदय-सूर्यास्त (अपवर्तन-संशोधित क्षितिज 90.833° पर), और उन्हीं से दिन के आठ-भाग विभाजन — पाँच काल, होरा, अभिजित, चौघड़िया। **स्तर B** को ग्रहों की वास्तविक स्थिति चाहिए: सूर्य-चंद्र के सच्चे देशांतर से तिथि, करण, नक्षत्र, योग, राशि और लग्न।

ग्रह-स्थितियाँ **Skyfield और साथ में बँधी JPL DE421 पंचांग-गणना** से आती हैं — वही श्रेणी जो व्यावसायिक खगोल में प्रयुक्त होती है, ऐप के भीतर ही रखी है, ताकि चलते समय कुछ भी डाउनलोड न हो। निरयन (sidereal) देशांतर अयनांश घटाकर मिलता है, जो एक अयन-गति बहुपद से निकाला जाता है। हर नक्षत्र- और राशि-आधारित नियम यही निरयन स्थिति पढ़ता है।

> ईमानदार संकेत: अयनांश का शून्य-बिंदु एक **खुला निर्णय** है। वर्तमान मान कठोर चित्रा-आधार से थोड़ा भिन्न है; यह प्रलेखित है, छिपा नहीं, और केवल नक्षत्र-संधि पर संवेदनशील समयों को एक-दो मिनट खिसकाता है — तिथि पर कोई प्रभाव नहीं।

03

दिन के पाँच अंग (पंचांग)

> **नक्षत्राणि मुहूर्ताश्च पक्षाहोरात्रसन्धयः ।**
> **संवत्सरा दिनेशाश्च कलाः काष्ठाः क्षणा लवा ॥**
>
> बृहत्संहिता ४७।५९ · Bṛhatsaṃhitā 47.59 (Varāhamihira)

> “नक्षत्र और मुहूर्त, पक्ष, होरा, दिन-रात्रि की संधियाँ; संवत्सर और दिन, कला, काष्ठा, क्षण और लव” — वराहमिहिर काल के इन्हीं अवयवों को गिनाते हैं। इनमें से हर विभाजन वही है जिसे यह इंजन गणित से निकालता है; कोई अनुमान नहीं।

पंचांग का अर्थ ही है “पाँच अंग”: **तिथि** (चांद्र दिन), **वार** (सप्ताह-दिन), **नक्षत्र** (चंद्र का तारा), **योग** और **करण**। हर एक एक सटीक खगोलीय राशि है। तिथि सूर्य से चंद्र का अंतर है, 12° के पगों में — सूर्य सिद्धांत इसे चांद्र मास का तीसवाँ भाग कहता है, वह अवधि जिसमें चंद्र सूर्य पर 12° आगे बढ़ता है। नक्षत्र चंद्र का निरयन देशांतर है, 13°20′ (360°/27) के पगों में। योग (सूर्य + चंद्र) देशांतर उन्हीं पगों में; करण आधी तिथि है।

संदर्भ: सूर्य सिद्धांत (अनु. बर्जेस, 1860), तिथि = चांद्र मास का 1/30 = 12° अंतर। यही एक परिभाषा इंजन की तिथि, करण, योग और अमावस्या/पूर्णिमा गणना का आधार है।

04

मुहूर्त के कारक, और हर एक कहाँ लिखा है

> **दिग्देशचेष्टास्वरवासरर्क्षमुहूर्तहोराकरणोदयांशान् ।**
> **चरस्थिरोन्मिश्रबलाबलं च बुद्ध्वा फलानि प्रवदेद् द्रुतज्ञः ॥**
>
> बृहत्संहिता ९५।१ · Bṛhatsaṃhitā 95.1
>
> जानकार वार, नक्षत्र, मुहूर्त, होरा और करण को — प्रत्येक के बल-अबल को तौलकर — पढ़ता है, तभी फल कहता है। इंजन का निर्णय यही पठन है, बस नियमबद्ध और पुनरुत्पाद्य बनाया हुआ।

दिन-काल के वर्जन — काल

दिन के प्रकाश को आठ बराबर भागों में बाँटा जाता है; हर दिन एक बदलता भाग राहु, यमगण्ड और गुलिक का होता है, वार के अनुसार। इंजन इन्हें इस आधार पर स्तरित करता है कि शास्त्रीय निषेध कितना अशर्त है: **राहु काल = कठोर अवरोध** (एकमात्र अशर्त); **यमगण्ड और काल = प्रबल वर्जन**; **गुलिक और अर्धप्रहर = मृदु** (गुलिक में एक शुभ अपवाद व निवारक हैं)। स्रोत: कालप्रकाशिका; पुनः-स्तरीकरण ADJUDICATION.md में।

साफ़ कहें तो: राहु काल / गुलिक / यमगण्ड काल और चौघड़िया पंचांग की **परंपरा** हैं (दक्षिण-भारतीय परंपरा में सर्वाधिक प्रबल), प्राचीनतम संस्कृत कोश में तिथि-नक्षत्र मुहूर्त से हल्के। इंजन यह मानता है, और किसी “शुभ” चौघड़िया को उन्हीं मिनटों पर कठोर काल के ऊपर कभी हावी नहीं होने देता। चौघड़िया का कोई शास्त्रीय संस्कृत मूल नहीं है।

दिन की अपनी श्रेणियाँ — तिथि, नक्षत्र, योग, करण

तिथि: पक्ष के दिन नंदा / भद्रा / जया / रिक्ता / पूर्णा में आते हैं; **रिक्ता** तिथियाँ (4, 9, 14) “रिक्त” हैं और नए कार्य के लिए वर्जित, वैसे ही अमावस्या। सदोष समुच्चय (4, 6, 8, 9, 12, 14) **पक्ष-छिद्र** (छिद्र, “छेद/दोष”) है, एक हल्की सावधानी। स्रोत: कालप्रकाशिका, पंक्ति 10798–10821।

वार-नक्षत्र श्रेणी: हर वार दिन के चंद्र-नक्षत्र से अच्छा या बुरा बैठता है। सर्वोच्च श्रेणी **सिद्ध / अमृत**; विनाशकारी श्रेणी **नाश / मृत्यु / दग्ध**। कठोर प्रामाणिक संयोग (अमृत-सिद्धि, मृत्यु, दग्ध) तीन स्रोतों में पुष्ट; प्रत्येक वार की पूरी सूचियाँ कालप्रकाशिका अध्याय 35 से। **योग:** 27 नित्य-योगों में व्यतीपात (17) और वैधृति (27) पूरी अवधि के लिए अवरुद्ध; सात अन्य केवल अपनी आरंभिक नाड़ियों में मालिन्य रखते हैं। **करण:** विष्टि (भद्रा) वर्जित, चार स्थिर करणों सहित।

वैयक्तिक कारक — केवल यदि आप जन्म-नक्षत्र दें

ताराबल आपके जन्म-नक्षत्र से आज तक नक्षत्र गिनता है, मॉड 9: शुभ 2, 4, 6, 8, 9 पर। यहाँ एक स्रोत-विरोध का निर्णय हुआ — "22वाँ = वैनाशिक" मान्यता **अस्वीकृत** है: मानक नवतारा सूत्र से 22वाँ क्षेम (शुभ) है, और बी.वी. रमन इस 22-को-विनाशकारी अंधविश्वास का स्पष्ट खंडन करते हैं। **चंद्राष्टम** महीने के उन ~2 दिनों को चिह्नित करता है जब चंद्र आपकी जन्म-राशि से 8वीं राशि में हो। दोनों वैकल्पिक; इंजन जन्म-विवरण के बिना पूरी तरह चलता है।

यात्रा-कारक, और पंचांग-गणित के दोष

यात्रा के लिए: **दिशा-शूल** वार की वर्जित प्रस्थान-दिशा है (सोम/शनि पूर्व, गुरु दक्षिण, रवि/शुक्र पश्चिम, मंगल/बुध उत्तर), ग्रंथोक्त सूर्योदय-से-घटिका छूट सहित; और **पंचक-दक्षिण** दक्षिण यात्रा रोकता है जब चंद्र 300° के आगे हो (धनिष्ठा का उत्तर भाग → रेवती), यम की दिशा। सूक्ष्म पंचांग-दोष — **गंडांत** (चंद्र/सूर्य/लग्न 0°/120°/240° की संधियों पर), **संक्रांति** (सूर्य का राशि-प्रवेश), कार्य-कारक ग्रह का **अस्त व वक्र** — BPHS, विल्हेम और कालप्रकाशिका से सटीक कक्षा (orb) लेकर चलते हैं।

05

निर्णय: एक क्रम, कोई अंक नहीं

हर सक्रिय कारक एक स्तर से चिह्नित होता है, और निर्णय **स्तर-प्रथम है, योगात्मक नहीं**। क्षण क्रम से द्वारों से गुज़रता है: (1) कोई **कठोर अवरोध** (T0 — राहु काल, विष्टि, अमावस्या, व्यतीपात/वैधृति, गंडांत) → **अवरुद्ध**। (2) अन्यथा कोई **प्रबल, समय-बद्ध वर्जन** (T1) → **वर्जित**। (3) अन्यथा समर्थनों में से मृदु सावधानियाँ घटाकर शेष उसे उत्तम / शुभ / सामान्य / निर्बल श्रेणी देता है।

दो संरचनात्मक नियम ईमानदारी की रक्षा करते हैं। एक दिन-भर की नैत्यिक सावधानी (रिक्ता या प्रतिकूल-नक्षत्र **दिन**) निर्णय को अवरुद्ध करने के बजाय "काम-योग्य" पर सीमित कर देती है — जीवित दिन को जीवित रखती है। और **अभिजित**, दिन के 15 मुहूर्तों में 8वाँ, स्थानीय मध्याह्न पर, जब कोई कठोर या प्रबल वर्जन न हो तो क्षण को कम-से-कम शुभ तक उठाता है — पर वह T0/T1 को **कभी** नहीं लाँघ सकता। छोटे पूर्णांक केवल शुभ↔सामान्य के बीच श्रेणी देते हैं; कोई स्तर नहीं लाँघते। यहाँ शुद्धता संरचनात्मक है, संख्यात्मक नहीं।

06

स्रोत, और हम कहाँ 'परंपरा' कहते हैं

मूल सत्य प्राथमिक ग्रंथ हैं, किसी मॉडल की स्मृति नहीं। प्रमुख मुहूर्त संदर्भ **कालप्रकाशिका** (एन.पी.एस. अय्यर, 1917, सार्वजनिक-डोमेन) है; खगोल **सूर्य सिद्धांत** (बर्जेस, 1860) से; ग्रह व होरा की प्रकृति **बृहत्संहिता** (वराहमिहिर) से; प्रामाणिक मुहूर्त कोश **मुहूर्तचिंतामणि** (राम दैवज्ञ, 1601) और **मुहूर्त मार्तण्ड**; और पठन-सत्यापन हेतु BPHS तथा अन्र्स्ट विल्हेम का मुहूर्त संकलन।

> OCR-ईमानदारी: संग्रहीत मुहूर्तचिंतामणि प्रतियाँ OCR-स्तर की देवनागरी हैं। उनका कोई श्लोक **प्रतिनिधित (proxied)** माना जाता है, श्लोक-संख्या से उद्धृत, जब तक वह मानव बहु-साक्षी प्रमाण-पास न कर ले — इंजन का गणित सत्यापित अंग्रेज़ी (विल्हेम / BPHS / कालप्रकाशिका) पर चलता है, कच्चे OCR पर नहीं। इस दस्तावेज़ में उद्धृत दोनों श्लोक स्वच्छ साक्षियों (बृहत्संहिता की टंकित देवनागरी) से हैं।

07

इस पर विश्वास ही नहीं, जाँच भी क्यों की जा सकती है

इंजन में **336 अभिकथनों** का प्रतिगमन-परीक्षण है जो किसी भी परिवर्तन के प्रकाशित होने से पहले उत्तीर्ण होना चाहिए — नियत-परीक्षण (नियम सही स्तर पर सक्रिय हो), अपरिवर्त्य-परीक्षण (समर्थनों का ढेर कभी स्तर-सीमा न लाँघे), और कम-से-कम दो स्वतंत्र स्रोतों से प्रति-जाँच (एक ऑफ़लाइन खगोल-पुस्तकालय और एक सजीव पंचांग)। सात भाषाओं में इसका स्थानीयकृत

तर्क एक पैरिटी-द्वार द्वारा इंजन के अपने गद्य से **बाइट-समान** रखा जाता है, ताकि कोई अनुवाद चुपचाप वह न कह सके जो इंजन ने नहीं कहा।

समय किसी अन्य पंचांग से एक-दो मिनट भिन्न हो सकता है — यह परंपरा-भेद है (सूर्योदय की परिभाषा, अयनांश-मत), त्रुटि नहीं, और जहाँ महत्व है वहाँ कहा गया है। ऊपर का सब कुछ आपकी जाँच के लिए खुला है: कोई सूर्योदय पुनः गणें, कोई तिथि पुनः निकालें, किसी निर्णय को कारक-दर-कारक उसके श्लोक तक पीछे ले जाएँ।

यह एक सूचनात्मक, पारंपरिक मुहूर्त संदर्भ है — कोई व्यावसायिक (वित्तीय, विधिक या चिकित्सकीय) सलाह नहीं, और कोई वैज्ञानिक दावा नहीं करता। समय परंपरा-भेद से अन्य पंचांगों से थोड़ा भिन्न हो सकते हैं। देवलोक द्वारा निर्मित · muhurat.day